ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in February 2025

उर्मिला शिरीष की कहानियों में स्त्री संवेदनाओं का बहुआयामी विश्लेषण

नरपत मोरी, शोधार्थी, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही, राजस्थान
डॉ. रेणुका, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही, राजस्थान

सारांश

उर्मिला शिरीष हिंदी साहित्य की प्रतिष्ठित लेखिकाओं में से एक हैं, जिनकी कहानियाँ स्त्री संवेदनाओं, संघर्षों और सामाजिक परिवर्तनों को दर्शाने में सक्षम हैं। उनकी कहानियों में नारी मन की गहराइयों को छूने की अद्भुत क्षमता है। यह शोध पत्र उनकी कहानियों में स्त्री संवेदनाओं के बहुआयामी विश्लेषण पर केंद्रित है।

उर्मिला शिरीष ने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री जीवन की विविध परिस्थितियों को उजागर किया है। उनकी कहानियों में स्त्री के मानसिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक पक्षों को विशेष रूप से उभारा गया है। उनका लेखन नारीवाद, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक असमानताओं, और स्त्री-पुरुष संबंधों पर केंद्रित है।

परिचय-

हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन ने एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है, जिसमें उर्मिला शिरीष का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनकी कहानियाँ भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति, उसकी संवेदनाओं, संघर्षों और मानसिकता को प्रकट करने का सशक्त माध्यम हैं। यह शोध पत्र उनकी कहानियों में स्त्री संवेदनाओं के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेखिका ने अपनी लेखनी से समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं नारी जीवन की परिस्थितियों,सच्चाइयों एवं विडंबनाओ को यथार्थ रूप से उकेरा है। लेखिका ने नारी जीवन व उसकी समस्याओं से संबंधित साहित्य कार्य अधिक किया है।

स्त्री जीवन की जटिलताएँ और मानसिक द्वंद्व उर्मिला शिरीष की कहानियाँ स्त्री के मानसिक द्वंद्व को गहराई से उकेरती हैं। उनकी कहानी "शहर में अकेली लड़की" शहरी जीवन में अकेली रह रही स्त्री के भय, संघर्ष और आत्मनिर्भरता को दर्शाती है। वहीं, "सहमा हुआ कल" में पारिवारिक प्रतिबंधों और समाज की रूढ़ियों के कारण स्त्री की भावनात्मक उलझनों को उजागर किया गया है। इन कहानियों में नायिकाएँ बाहरी परिस्थितियों से जूझते हुए आत्मनिर्णय की ओर बढ़ती हैं। लेखिका ने अपने कथा साहित्य में समाज के विभिन्न पहलुओं को केंद्र में रखते हुए आर्थिक शोषण, सामाजिक असमानता, राजनीतिक दमन, नारी जीवन के संघर्ष, धार्मिक आडंबर, वेश्यावृत्ति की दुर्दशा, यौन शोषण, विवाह की विडंबनाएँ, वर्गभेद और शिक्षा की कठिनाइयों जैसे विषयों को प्रमुखता दी है। उन्होंने साहित्य को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाते हुए इन समस्याओं पर गहन व्यंग्य किया है और उनके यथार्थ स्वरूप को पाठकों के समक्ष यथार्थ किया है।

परिवार और सामाजिक दायरे में स्त्री की भूमिका इन कहानियों का मुख्य केंद्र बिंदु संवेदनशील नारी है, जो कहीं अपने जीवन की कठोरताओं का साहसपूर्वक सामना करती है, तो कहीं मौन रहकर उन

कष्टों को सहन करती चली जाती है। नारी की यह संघर्षशीलता और सहनशीलता इन कहानियों में गहरे भाव से उभरकर सामने आती है। दलाल कहानी में बेटी माँ की खुदगर्जियों को ढोती हुई अंततः विद्रोह करती है- "मुझे चुप रहने को कहती है और वो कुछ भी कहता रहे सो कुछ नही कहती। तूने तो मेरा जी जिंदगी भर के लिए जला दिया न उस लगड़े बुढ़ऊ के साथ बाँधकर।" शिरीष की कहानियाँ परिवार और समाज में स्त्री की पारंपरिक भूमिका को चुनौती देती हैं। "बाबा! मम्मी को रोको" जैसी कहानियाँ समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता को उजागर करती हैं। वे दिखाती हैं कि पारंपरिक ढाँचों के कारण स्त्री को मानसिक और शारीरिक दोनों स्तरों पर संघर्ष करना पड़ता है। लेखिका ने नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं एवं स्वरूपों को इस कहानी संग्रह के माध्यम से यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। साहित्यिक कहानियों की विडम्बना है कि वे यथार्थ को छूते-छूते रह जाने वाले ऐसे चित्र है, जो लाख प्रयासों के बावजूद झुठलाये भी नहीं जा सकते, उसकी काया समग्र सामाजिक अनुभूतियों, समष्टीजन्य चेतनाओं घटित विघटित परम्पराओं और संवेदना की झील में डूबते उतराते संदर्भों का मानक प्रारूप होता है।

केंचुली कहानी संग्रह की प्रमुख संवेदना नारी जीवन और पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं को उद्घाटित करती है। इसमें निम्न मध्यमवर्गीय समाज के अंतर्विरोध और संघर्ष उभरकर सामने आते हैं। पति-पत्नी के जीवन के विविध पक्ष और स्वरूपों को इस प्रकार चित्रित किया गया है कि इन कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज के निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की वास्तविकताओं को गहराई से समझा जा सकता है। इन कहानियों का संसार बहुआयामी और व्यापक दृष्टिकोण वाला हैजो समाज की अंत:स्थ समस्याओं पर प्रकाश डालता है।

स्त्री की स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय स्त्री की स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय उर्मिला शिरीष की रचनाओं में प्रमुख विषयों में से एक है। "केंचुली" में स्त्री को अपने अस्तित्व की पहचान के लिए संघर्षरत दिखाया गया है। कहानी की नायिका न केवल अपनी परिस्थितियों से लड़ती है बल्कि अपने निर्णय स्वयं लेने की दिशा में अग्रसर होती है। इसी तरह, "चौथी पगडंडी" में स्त्री के आत्मनिर्णय और उसकी स्वतंत्रता की खोज को प्रस्तुत किया गया है। चीख कहानी संघर्ष और परिस्थितियों से जूझने की प्रेरणादायक कथा है। इसमें नायिका एक खिलाड़ी है जो मैदान में निरंतर संघर्ष करती है जैसे वह जीवन की कठिनाइयों से भी जूझती है। कहानी में बलात्कार पीड़िता के साथ समाज द्वारा किए गए अन्याय को रेखांकित किया गया है जहाँ बार-बार यह संदेश दिया गया है कि पीड़िता की कोई गलती नहीं होती फिर भी समाज उसे अपराधी की तरह देखता है। नायिका अपने जीवन के कठिन मोड़ पर भी हार नहीं मानती और विपरीत परिस्थितियों से निकलने का प्रयास करती है जिससे उसकी अदम्य इच्छाशक्ति और साहस का परिचय मिलता है। नायिका अंत में कह जाती है- "मैंने कोई गलती या अपराध नहीं किया जिसके लिए मैं जिंदगीभर आत्मग्लानि में घुलूँ। मम्मी मैं हर स्थिति का सामना करूँगी चाहे मेरा कोई साथ दे या न दे।"

संवेदनाओं की विविधता और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण शिरीष की कहानियाँ स्त्री संवेदनाओं के विविध रूपों को प्रदर्शित करती हैं। "दीवार के पीछे" में स्त्री के भीतर के भय और असुरक्षा को

दर्शाया गया है, वहीं "रंगमंच" और "तूफान" जैसी कहानियाँ स्त्री के भीतर की विद्रोही चेतना को सामने लाती हैं। लेखिका ने इन कहानियों में स्त्री मन की जटिलताओं को अत्यंत सजीवता से चित्रित किया है। रंगमंच कहानी संग्रह में करुणा, प्रेम की पवित्र भावना, राजनीतिक चालें, व्यवस्थाओं के दबाव और तनाव के बीच अकेले होते जा रहे मनुष्य की पीड़ा को गहराई से अभिव्यक्त किया गया है। इस संग्रह में लेखिका ने मानवीय भावनाओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है जहाँ चिरंतन सवालों, वैचारिक दृष्टिकोण और आध्यात्मिकता के बीच मानवीय संवेदनाओं का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। लेखिका की नवीन साहित्यिक दृष्टि इन कहानियों में स्पष्ट रूप से उभरती है। स्वांग और तूफान जैसी कहानियाँ नारी के संघर्ष और सामाजिक परिवेश पर आधारित हैं जहाँ नारी की विवशता के साथ-साथ अन्याय और विसंगतियों के प्रति उसके प्रतिकार का सशक्त रूप भी देखने को मिलता है।

निष्कर्ष-

उर्मिला शिरीष की कहानियाँ भारतीय समाज में स्त्री की जटिल स्थिति, उसकी संवेदनाओं, मानसिकता, और संघर्ष को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाएँ न केवल स्त्री जीवन की वास्तविकताओं को उजागर करती हैं, बल्कि उन्हें एक नई दिशा देने का भी प्रयास करती हैं। इन कहानियों में नारीवाद की स्पष्ट झलक मिलती है, जो न केवल साहित्यिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची-

शिरीष, उर्मिला- "शहर में अकेली लड़की", किताबघर प्रकाशन
शिरीष, उर्मिला- "सहमा हुआ कल", साहित्य भंडार
शिरीष, उर्मिला- "केंचुली", राजकमल प्रकाशन
शिरीष, उर्मिला- "बाबा! मम्मी को रोको", साहित्य भंडार
शिरीष, उर्मिला- "दीवार के पीछे", किताबघर प्रकाशन
शिरीष, उर्मिला- "रंगमंच", वाणी प्रकाशन
शिरीष, उर्मिला- "तूफान", वाणी प्रकाशन
मिश्रा, कमला- "स्त्री विमर्श और हिंदी कहानी", साहित्य अकादमी
त्रिपाठी, रेखा- "नारीवाद और हिंदी साहित्य", वाणी प्रकाशन
अग्रवाल, सुमित्रा- "हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना", भारतीय साहित्य प्रकाशन